ISSN:2583-8849



रतन लाल मेनारिया "नीर"
चितौड़गढ, राजस्थान

उम्मीद

शंकर और संगीता का इकलौता लड़का था विशाल अभी ग्यारवीं कक्षा में पढता हैं! दसवीं कक्षा में पुरे स्कूल में प्रथम व तहसील में सेकंड स्थान प्राप्त किया था!
पढनें में बहुत ही होशियार लड़का था दोनों पती पत्नी अपने इकलोते लड़के की पढाई में कोई कमी नहीं रखना चाहते थे, क्योंकि जिंदगी में शंकर ने बहुत दुख उठाये बचपन से पिता का शाया उठ चुका था, इसलिए वह ज्यादा पढाई नही कर सका लेकिन शंकर को अपने बेटे से बहुत उम्मीद हैं!
क्योंकि विशाल को पढाकर बड़ा आदमी बनाना हैं,
शंकर मन में सोचता हैं, विशाल पढ लिखकर बड़ा आदमी बनेगा तो मैं दुनिया के सामने गर्व से चल संकुगा!
एक दिन विशाल अपनी माँ से बोला -
"माँ मैं दोस्तों के साथ नदी में नहाने जा रहा हूँ! "
संगीता -
"बेटा अभी बरसात का मोसम हैं, पानी का बहाव बहुत तेज़ हैं,और तुझें तेरना भी नही आता इसिलिए मत जा!"
विशाल-
"माँ तुम चिन्ता मत करों मैं अकेला नही जा रहा हूँ, साथ में अपने मोहल्ले के दोस्त हैं, व मैं ज्यादा गहरे पानी में नही जाउंगा!"
"बेटे की जिद्द के आगे माँ हार गयी,
फिर संगीता हिदायत देते हुएं बोली -
"तुम्हारें पापा घर नही आएं उससे पहले घर लोट आना! "
विशाल -
"मैं जल्दी ही आ जाउंगा! "
यह कह कर विशाल अपने छह दोस्तों के साथ नदी के एनीकट पर नहाने चले गये,
उन दोस्तों में चार को तेरना आता था, व विशाल व उसका एक और दोस्त विनोद को तेरा नही आता था!
सभी नदी के एनीकट पर नहाने का आंनद ले रहें थे, विशाल व विनोद वही नहा रहें थें, बारीश अधिक होने से नदी का बहाव तेज हो गया
एनीकट पर पानी का बहाव तेज देखकर चार दोस्त तो दोड कर बाहर निकल गये जबकी दोनों दोस्त एनीकट के पास एक बीच में चट्टान पर फस गये! चट्टान के आसपास पानी बढता जा रहा था
उन दोनों को देखकर एनीकट के किनारे पर लोगों की भीड़ इकट्ठा हो गयी, बहुत से मोबाइल पर विडियो बनाने लगे!
जब वे डुबने लगे तो भी बहुत से लोग विडियो बनाने में लगे रहें
विशाल और उसका दोस्त विनोद दोनों ने मोत से बहुत समय तक जगं लडी लेकिन आखिर कार मोत से जंग हार गये!
जब विशाल व विनोद के माता पिता को पता चला
वे एनीकट पर पहुँचे तब तक दोनों तेज बहाव में बह गये!
जब वो मोत का विडियो शोशियल मिडिया पर सभी ने देखा तो हर व्यक्ति की आखें नम हो गयी! हर व्यक्ति यही सोच रहा था थोड़ी कोशिश और करते तो शायद बचा लेते, लोगों ने बचाने की बहुत कोशिश की लेकिन नाकाम रहें!
फिर प्रशासन व गोताखोर ने मिलकर उन दोनों की लाशें बाहर निकाली
विनोद के माता पिता का बहुत बुरा हाल था!
शंकर और संगीता ने
अपने सामने विशाल की लाश देखी तो सुधबुध खो दी!
अब उसके बुढापे का सहारा कोन? बनेगा, इतना होनहार बेटा एक पल में आखों के सामने से चला गया! अपने बेटे से जो उम्मीद थी, उस उम्मीद पर पानी फर गया विशाल तो दुसरी दुनिया में चला जो अब वापिस आने वाला नही हैं!
काश शंकर व संगीता के एक और लड़का होता तो अच्छा रहता!